Total Pages : 8

2381/P

II Year Arts Examination, 2016

HINDI LITERATURE

Paper–I

(काव्य)

Time : Three Hours
Maximum Marks : 100

PART - A (खण्ड-अ) [Marks : 20

Answer all questions (50 words each).
All questions carry equal marks.
सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर पचास शब्दों से अधिक न हो।
सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART - B (खण्ड-ब) [Marks : 50

Answer *five* questions (250 words each).
Selecting *one* from each unit. All questions carry equal marks.
प्रत्येक इकाई से **एक-एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल **पाँच** प्रश्न कीजिए।
प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो।
सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART - C (खण्ड-स) [Marks : 30

Answer any *two* questions (300 words each).
All questions carry equal marks.
कोई **दो** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो।
सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड-अ

1. सभी प्रश्न अनिवार्य है। सभी के अंक समान हैं :

(इकाई-I)

(i) केशव दास के दो काव्य-ग्रन्थों का नामोल्लेख कीजिये।

(ii) मतिराम रीतिकाल की किस काव्यधारा के कवि हैं?

(इकाई-II)

(iii) 'कूलन में, केलि में, कघारन में, कुंजन में' पंक्ति के रचयिता कवि का नाम लिखिये।

(iv) सेनापति द्वारा रचित किसी एक ग्रन्थ का नाम लिखिये।

(इकाई-III)

(v) 'प्रेम की पीर' के कवि किसे कहा जाता है?

(vi) भूषण की कविता की दो प्रमुख प्रवृत्तियों का नामोल्लेख कीजिए।

(इकाई-IV)

(vii) बिहारी जयपुर के किस राजा के आश्रय में रहे?

(viii) 'राग-रत्नाकर' ग्रन्थ के कवि कौन हैं?

(इकाई-V)

(ix) प्रसादगुण किसे कहते हैं? एक उदाहरण दीजिये।

(x) श्रुति कटुत्व काव्य दोष का एक उदाहरण लिखिये।

खण्ड-ब

प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का है।

(इकाई-I)

2. प्रसंग सहित व्याख्या कीजिये :

पूरन पुराण भरू पुरुष पुरान परि-

पूरन बतावैं, न बतावैं और उक्ति कों।

दरसन देत, जिन्हें दरसन समुझैं न,

नेति नेति कहैं छांडि भेद जुकिको

जानि यह केसोदास अनुदिन राम-राम

रढ़त रहत न डरत पुनरुक्ति को

रूप देहि अनिमाहिं, गुण देहि गरिमाहिं,

नाम देहि महिमाहि, भक्ति देहि मुक्ति कों।

अथवा

पगी प्रेम नन्दलाल के, भरन आपु जल जाइ

घरी घरी घर के तरैं, घरनि देत ढ़रकाइ

दिपै देह दीपति गयो, दीप बयारि बुझाय

अंचल ओट किये तऊ, चली नवेली जाय

तेरे मुख की मधुराई, जो चाखी चख चाहि

लगत जलत जंबीर सों, चंद चूक सों ताहि।

(इकाई-II)

3. बरन बरून तरू फूले उपवन बन

सोई चतुरंग संग दल लहियत है।

बंदी जिमिं बोलत बिरद बीर कोकिल है

गुंजत मधुप गान गुन गहियत है।

आवैं आस-पास पुहूपन की सुलास सोई

सौंधे के सुगंध मांझ सने रहियत है।

सोभा कौं समाज, सेनापति सुख-साज, आज,

आवत बसंत रितुराज कहियत है।

अथवा

विधि के कमंडल की सिद्धि है प्रसिद्धि यही

हरि पद पंकज-प्रताप की लहर है।

कहैं पद्माकर गिरीस-सीस मंडल के

मंडल की माल ततकाल अधहर है।

भूपति भगीरथ के रथ की सुपुण्य पक्ष

जन्तु जप जोग फल फैल की फहर है।

छोम की छहर गंगा रावरी लहर

कलिकाल को कहर जमजाल को जहर है।

(इकाई-III)

4. भूषण के काव्य में वीर रस की प्रभावी अभिव्यक्ति है। उदाहरण सहित समझाइये।

अथवा

पद्माकर की काव्य कला की विशेषतायें बताइये।

(इकाई-IV)

5. बिहारी के काव्य में भक्ति, नीति और शृंगार की त्रिवेणी प्रवाहित है। उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिये।

अथवा

देव के काव्य सौष्ठव का मूल्यांकन कीजिये।

(इकाई-V)

6. रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियों पर उदाहरण सहित प्रकाश डालिये।

अथवा

रस की परिभाषा देते हुए शृंगार एवं वीर रस को सोदाहरण समझाइये।

खण्ड-स

7. ''देखन में छोटे लगे घाव करैं गंभीर'' पंक्ति के आधार पर बिहारी के काव्य-वैभव पर प्रकाश डालिए।

अथवा

कवि भूषण की राष्ट्रीय भावना पर निबन्ध लिखिये।

8. रीति काल के नामकरण के सम्बन्ध में युक्तियुक्त विवेचना कीजिये।

अथवा

सेनापति के ऋतु वर्णन की विशेषताओं का वर्णन कीजिये।